

आध्यायः ३॥ यथा तु तेषां माहनी ॥ ६ ॥ विनोदकलकना
गमिका मिनी रवीयाः त्रिपुनयुनदह ॥ ७ ॥ सर्वलोकाप्रम
ता विनोदकममनित्यं नाति यश्च कथौ गलशतव नितासा
॥ ८ ॥ कदा निसुखं ॥ ९ ॥ या गौर्गगति यत्रिमाहयती ववि ॥ १० ॥
का गति या त्रिपुन रवी विना मिनी ति । सा यश्च नाव कलिताम
मयश्च नागः का किं कंठुन स ना त्वयि या तु नित्यं ॥ ११ ॥ आ आ
हुति यथा यय मध्याया काम रायिनी । त्रिषा त्रिपु नतामितिः

सामति यत्र रवी ॥ १२ ॥ उदय त्रि डि स्रामा या तुवा ला तुमा
ताः यम त्रि डि यम कथं तत्र नृप विदुषा ॥ १३ ॥ वन नयन न को का
मध्या ना रवी माः मव तुम कल नर्काः कर्षती मृदनी म ॥ १४ ॥ म
ला या नि म्मा ला या निः वि ॥ १५ ॥ या निः स्रश्च वलि । सा या तु त्रिपु ना नित्यं
सुनश्च वी च रवी ॥ १६ ॥ ललाटे सुन गश्च वीः पूर्वस्यां डि डिः कामा
नित्यं ति कुरु नुरु सुम त्रिपु न सुदनी ॥ १७ ॥ उवा म्मा ॥ १८ ॥ तथा
रुयाः डि डि म्मा त्रिपु ना रत ॥ १९ ॥ वदय नीरु ग गलः या तु त्रिपु न

नवी॥१॥ वेङ्कटेश्वरिणः सावित्री त्रिपुङ्गवः ॥ त्रिपुङ्गवः
यमद्वैतादीन् वाचनीयान् सदा वदतु ॥१॥ कल्पयामासुः प्रसन्नोऽपि
विष्णोर्गणानि निनी ॥ अथानि कुरु गच्छा नी ॥ वालामा त्रिपुङ्गवदु ॥
१॥ अर्चयामासुः प्रसन्नोऽपि त्रिपुङ्गवः ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
मायाः निर्व्याप्य कुरु लेश्वरी ॥१॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
न गमयन्ती ॥ नाको वदती ॥ अथानि कुरु गच्छा नी ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥१॥
अर्चयामासुः प्रसन्नोऽपि त्रिपुङ्गवः ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥

त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥२०॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
ना ॥ वाग्दत्ता ॥ ना वदन्ती ॥ सदा त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥२१॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
न प्रीतिः ॥ या त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ अना ॥ अथानि कुरु गच्छा नी ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
नाको वदती ॥२२॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ या त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ नाको वदती ॥
नामा सदा वदतु ॥ कुरु गच्छा नी ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥२३॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
यिष्णोर्गणानि निनी ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ काममूर्तः सदा वदतु ॥
२४॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥
सिः सदा वदतु ॥२५॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥ त्रिपुङ्गवः सदा वदतु ॥



वड्डय०। अरुयंवरुयंयुनिःसवथ्यारुतकावनी॥२७॥ उड्डो
अरावरुतसिक्तिकनवरलेनकावन्नासुचकाः कालागिपुत्रे
भायि०सकलसुनगलेनवितामूमुमाला। ननधनैकतान
युवनसकलंनतुनूतयुनिर्दःयायादूद्वनवाधसकलनय
रुताभागनीभागयुक०॥२०॥ त०यादुदडिर्मानित्यः॥२०॥
थयादुनित्यः॥२०॥ वयादुगुदु०॥ माः॥ यादुकलूया०॥
२०॥ नेकाभमनसालीसी॥ नसियादुसर्वत्रा॥ ०॥ क०यादुस
डाका॥ वक्रर॥ ०॥ २०॥ विद्याविद्यानामिनीकामन

यासूला०॥ माययायादिमाता। वक्रा०॥ ०॥ रवितालीतिन
मीः॥ रकाकृयासर्वता०॥ रवीमा॥३०॥ अयमध्यानामिनित्य
डासमाकलूनसिद्धिरयायनाया। आदावनीमध्यानायता
नाः॥ यायाद्वी०॥ यनी०॥ रवीया॥३०॥ यामरुया०॥ ०॥ यक
०॥ मयिके०॥ ०॥ वक्रा०॥ ०॥ ०॥ नाति०॥ त्वना०॥ नमी०॥ सुते॥
३०॥ त्ववक्रादिनवानिविष्ट०॥ विदुल्ल०॥ ०॥ रनित्यागिनी०॥ त्ववा
०॥ सुन०॥ ०॥ तनाकृतयुगमन०॥ यम०॥ ०॥ वन०॥ ०॥ लिता०॥ सुव
वसकल०॥ त्वकामिनीकामडाः०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥

[illegible][illegible]